भविष्य के लिए रूप-रेखा और योजना

शिक्षा, अनुसंधान और नवप्रवर्तन में उत्कृष्टता हासिल करने हेतु एक उच्च विकास पथ पर संस्था को लाने के लिए विश्वविद्यालय नेतृत्व ने आने वाले वर्षों में अपनाई जाने वाली समग्र योजना तैयार कर ली है।

I. **कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र जिन पर विश्वविद्यालय प्राथमिक आधार पर ध्यान केंद्रित करने का इरादा रखता है उनमें निम्नवत् शामिल हैं -**
   - शैक्षिक और अनुसंधान का जीवंत माहौल बनाने के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करना जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है और संस्था में चल रही सभी परियोजनाओं की समीक्षा करना। विश्वविद्यालय को एनएएसी से मान्यता दिलाने को प्राथमिकता दी जाएगी।
   - वेबसाइट को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली समस्त उपलब्ध जानकारी, सुविधाओं, संसाधनों और अवसरों का आधान बनाना ताकि विश्वविद्यालय के पणधारी संबंधित जानकारी तक पहुँचने के लिए भौगोलिक स्थिति की किसी भी बाधाओं से विचलित न हों। छात्रों के लिए उपयोगी और पूरक सामग्री का विशाल पूल उपलब्ध कराने हेतु ओपन शैक्षिक संसाधन (ओईआर), बृहद खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एमओओसी) और 'क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत उपलब्ध साधनों को जोड़ा जाएगा। एमओओसी छात्रों को कभी भी, कहीं भी सीखने के वातावरण की पेशकश करेगा, जो ज्ञान के आदान-प्रदान और प्रचार-प्रसार के लिए सबसे प्रभावी उपकरणों में से एक के रूप में तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है।
   - वांछित परिवर्तन देखने हेतु शिक्षक, छात्र और शिक्षणेत्तर समुदाय की आवश्यकताओं, मांगों और आकांक्षाओं को समझने के लिए उनके साथ बातचीत हेतु विश्वसनीय खुले मंचों की स्थापना की जाएगी।
   - विभिन्न आंतरिक केंद्रों और संस्थानों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों की विभिन्न शैक्षणिक तथा अनुसंधान की पहलों के वित्त पोषण, समर्थन तथा उन्हें कायम रखने के लिए एक निकाय कोष लिए विश्वविद्यालय विकास कायिक निधि की स्थापना करना। निकाय कोष में निधि सृजन निम्नवत से होगा, पर इन तक होगा:
     - उद्योग
     - पूर्व छात्रों से योगदान
     - बाह्य अनुसंधान अनुदानों से ओवरहेड अनुदान
     - परामर्श कार्य (कंसल्टेंसी)
     - एकत्व और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण
     - अंतरराष्ट्रीय निकायों से उनकी सामाजिक और शैक्षणिक पहलों के तहत अनुदान
   - समावेशी गुणवत्तापरक शिक्षा के उद्देश्य का पूरा करते हुए विकलांग और वंचित छात्रों के लिए विशेष पहल और कार्यक्रम। परिसर को भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार तथा विकलांग और वंचित की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने में सभी प्रयास किए जाएंगे। एक विधिवत् गठित प्रकोष्ठ सभी छात्रों को समान अवसर की दिशा में, यहाँ तक कि रोजगार अवसर सृजित करने की संभावनाओं को तलाशने के सभी तरह के कार्यक्रमों की प्रगति के संबंध में

सकारात्मक कार्रवाई और मानीटरन करेगा। रोजगार कौशल बढ़ाने के लिए योग्य छात्रों को अनुदान और सहायता भी प्रदान की जाएगी।

- समान अवसर प्रकोष्ठ यह सुनिश्चित करेगा कि सभी वर्गों के छात्रों को समुचित सहायता प्रदान की गई है; और पिछड़े और वंचित वर्गों के छात्रों को अन्य लोगों के साथ समतुल्य आगे लाने के लिए विशेष पहलें की जाएँगी।

II. मौजूदा विश्वविद्यालय प्रणाली को सशक्त और मजबूत बनाना:

- **ई-शासन:** विश्वविद्यालय के संपूर्ण क्रियाकलापों को ई-शासन की परिधि में लाने हेतु विश्वविद्यालय डिजिटलाइजेशन प्रक्रिया में तेजी लाएगा। संपूर्ण विश्वविद्यालय इंटरनेट के माध्यम से जोड़ा जाएगा ताकि सभी स्कूल, विभाग तथा केंद्र एक सामान्य नेटवर्क पर हों।
- **रोमांचक अवसर सृजित करने के लिए शिक्षा प्रणाली को बदलना- सीबीसीएस (रूचि आधारित आकलन प्रणाली)**
  - शिक्षक-केंद्रित से छात्र-केंद्रित शिक्षा के फोकस में बदलाव
  - छात्रों को अंतर-अनुशासनात्मक, अंतःअनुशासनात्मक पाठ्यक्रमों, कौशल-उन्मुख परीक्षाओं, व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से नए पाठ्यक्रम का चयन करने की अनुमति देना तथा छात्रों के लिए अधिक लचीलेपन को बढ़ावा देना।
  - शिक्षा को व्यापक तथा वैश्विक मानकों के समान बनाना।
  - छात्रों के लिए गतिशीलता को आसान बनाना।
- **संकाय विकास कार्यक्रम**: नई अधिगम एवं शिक्षण विधियों के लिए संकाय सदस्यों के लिए अवसरों का सृजन करना। अनुसंधान प्रस्ताव/पेपर विकसित करने में मदद के लिए उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **स्कूल / विभाग विकास कार्यक्रम**: अधिक उपकरणों तथा मौजूदा इमारतों का नवीकरण से प्रयोगशालाओं को समृद्ध करना। विभाग केंद्रित अनुसंधान सुविधा सृजित करने और अधिगम संसाधन केंद्र विकसित करने हेतु भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं से निधियाँ प्राप्त करना।
- **नई अधिगम एवं शिक्षण पद्धति संबंधी पहलें**: सीईसी पर उपलब्ध संपूर्ण ई-अधिगम सामग्री प्रदान करने, ई-सामग्री विकसित करने तथा एमओओसी (बृहत मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम) की भी शुरुआत करने हेतु ईएमएमआरसी (शैक्षिक संचार संघ, सीईसी का अंग) का पुर्नोत्थान किया जाएगा। एमओओसी छात्रों को 'कभी भी-कहीं भी' सीखने की सुविधा प्रदान करेगा जो ज्ञान को साझा करने और उसके प्रचार-प्रसार के सबसे प्रभावी उपकरण के रूप में तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है।
- **पुस्तकालय का आधुनिकीकरण**: विश्वविद्यालय में पुस्तकालय बुद्धि और ज्ञान का एक मंदिर है। इसके अतिरिक्त नए और मौजूदा शीर्षक प्राप्त करके तथा पत्रिकाओं की में बढ़ोत्तरी करके पुस्तकालय के पदचिह्न में संवृद्धि करना, एक प्राथमिकता पुस्तकालय को राष्ट्रीय ग्रिड से जोड़ना होगी ताकि इनफ्लिबनेट और इसके संबद्ध विश्वविद्यालयों और संस्थानों से संबंधित सभी ई-पत्रिकाएँ और ई-पुस्तकें भी विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए उपलब्ध हों। इससे कीमती राष्ट्रीय संसाधनों की बचत होगी। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, सभी कॉलेजों के

पुस्तकालयों और विभाग/स्कूल के पुस्तकालयों को विश्वविद्यालय के इंट्रानेट के माध्यम से जोड़ा जाएगा ताकि ज्ञान का निर्बाध प्रवाह हो सके।

- **रोजगार अवसर:** रोजगार प्रकोष्ठ का पुर्नोत्थान किया जाएगा और एक विशाल विश्वविद्यालय रोजगार प्रकोष्ठ स्थापित किया जाएगा जो सभी विभागों/ कॉलेजों/स्कूलों के मौजूदा रोजगार प्रकोष्ठों के साथ तालमेल करेगा ताकि अधिकतम संख्या में छात्रों को इसके दायरे में लाने हेतु एक समन्वित और केंद्रित प्रयास किया जा सके। रोजगार प्रकोष्ठ में सभी छात्रों का पंजीकरण अनिवार्य बनाया जाएगा ताकि प्रत्येक छात्र को नौकरी के लिए आवेदन करने का अवसर मिले। समान अवसर प्रकोष्ठ यह सुनिश्चित करेगा कि सभी वर्गों के छात्रों को उचित सहायता प्राप्त हो; और प्रतिस्पर्धाओं में समान अवसर देने हेतु पिछड़े और वंचित वर्गों के छात्रों को अन्य लोगों के साथ पर लाने के लिए विशेष पहल की जाएगी।
- **परीक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना:**
  - परीक्षा हेतु ऑनलाइन पंजीकरण
  - प्रवेश-पत्र ऑनलाइन जारी करना
  - प्रश्न-पत्र ऑनलाइन जमा करना
  - स्नातक पाठ्यक्रमों का केंद्रीकृत मूल्यांकन
  - विश्वविद्यालय के शिक्षण विभागों को सशक्त बनाने हुए स्नातकोत्तर परीक्षा का विकेंद्रीकरण।
- संकाय और न्यूनतम आवश्यक बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाकर मौजूदा विभागों को सशक्त बनाना।
- जीवन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणितीय विज्ञान, प्रदर्शन और ललित कला, भाषा और भाषाविज्ञान अध्ययन, औषधि विज्ञान और पर्यटन और होटल प्रबंधन आदि में नए पाठ्यक्रम/ कार्यक्रम प्रारंभ करना।
- अनुसंधान तथा नवप्रवर्तन के मौजूदा एवं नए क्षेत्रों को विकसित करने और उनमें सुधार करने के लिए बुनियादी सुविधाएँ व अवसर प्रदान करके अंतर और बहुविषयी फार्मेट के तहत विभिन्न केंद्र स्थापित करने को प्राथमिकता दी जाएगी। ये केंद्र अनुसंधान प्रकाशन की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ाने और टिकाऊ प्रौद्योगिकी को विकसित करने और अपने एकस्व (आईपीआर) प्राप्त करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेंगे।
- **शैक्षणिक लेखापरीक्षा केंद्र:** यह केंद्र सभी शैक्षणिक, अनुसंधान और विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, केंद्रों तथा संस्थान की संबंद्ध गतिविधियों के मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार होगा। इसे विश्वविद्यालय के लिए भावी मानक स्थापित करने का कार्य भी सौंपा जाएगा।
- **प्रौद्योगिकी स्टॉक केंद्र:** यह केंद्र मौजूदा और नए शोध के लिए मूल्य पैदा करने अथवा अनुसंधान को राजस्व में बदलने जैसे उद्देश्यों के साथ स्थापित किया जाएगा। अपरिपक्व प्रौद्योगिकियों के सुधार और उद्योगों में उनके स्थानांतरण की व्यवस्था करने के लिए शोधकर्ताओं, उद्योगपतियों, मूल्यांकनकर्ताओं और आईपीआर विशेषज्ञों के लिए साझा मंच प्रदान करने हेतु एक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किया जाएगा।
- **नीति और आदर्शीकरण केंद्र:** यह केंद्र निम्नलिखित क्षेत्रों में मूल्य पैदा करने पर ध्यान देगा:

- शासन के स्थूल और सूक्ष्म स्तर पर आत्म-निर्वाह के लिए नीति
- कार्बन पदचिह्न और हरित पहल नीति
- एकीकृत ई-सामग्री निर्माण, कार्यान्वयन और आउटरीच नीति
- सामाजिक-आर्थिक वितरण प्रणाली में सुधार हेतु नीति
- जलवायु परिवर्तन और मौसम की भविष्यवाणी के लिए मॉडलिंग: कारण और प्रभाव
- फसल की भविष्यवाणी और संबंद्ध अध्ययन के लिए मॉडलिंग
- मॉडलिंग अध्ययन: दवा वितरण, चिकित्सा रूपरेखा और आनुवंशिक कोड निर्माण अध्ययन, यातायात नियंत्रण, शेयर बाजार रुझानों का विश्लेषण एवं भविष्यवाणी आदि विभिन्न क्षेत्रों में वास्तविक समय पर समाधान उपलब्ध कराने हेतु एक उपकरण के रूप में मॉडलिंग का प्रयोग।

- **माध्यमिक कृषि और ऊर्जा संचयन केंद्र:** अवशेष फसल में मूल्यवृद्धि करने के उद्देश्य से वैकल्पिक ईंधन तथा जैवसामग्रियों के उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने के लिए जैवऊर्जा एवं जैवसामग्री केंद्र प्रस्तावित है।
- ऊर्जा संचयन एक नई और तेजी से विकसित हो रही अवधारणा है जो रोजमर्रा की आवश्यकताओं में ऊर्जा की कमी को पूरा करने हेतु दैनंदिन प्रक्रियाओं से ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए प्रयासरत है। मूल अवधारणा विभिन्न प्रक्रियाओं से अनुत्पादक ऊर्जा का दोहन करना और इसे विद्युत में परिवर्तित करना है, जैसे घिसाव, दबाव, वायु घर्षण, ज्वारीय ऊर्जा, घुमावदार गति, शरीरिक उष्मा आदि।
- **सामाजिक आउटरीच और प्रबंधन केंद्र:** निम्नलिखित पर विशेष ध्यान देते हुए समाज के सशक्तिकरण के लिए आउटरीच और प्रबंधन कार्यक्रम:
  - बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सफाई
  - नागरिकों के अधिकार और कर्त्तव्य
  - स्व-सहायता समूह तथा नेशनल कॉऑपरेटिव यूनियन ऑफ इंडिया (एनसीयूआई) के साथ सहयोग से माइक्रो-फाइनेंस सहकारी समितियाँ
  - महिलाओं सशक्तिकरण - प्रशिक्षण कार्यक्रम
  - लैंगिक अध्ययन और संवेदीकरण कार्यक्रम
  - संघर्ष निपटान और शांति अध्ययन
- **नप्रवर्तन, उद्यमिता और रोजगार केंद्र:** छात्रों को रोजगार से संबंधित सभी समाधान प्रदान करने के लिए इस केंद्र को एक गतिशील हब बनाया जाएगा। नवीन विचार, परिवर्तनशील मानसिकता को बढ़ावा देने और छात्रों में रोजगारक्षमता बढ़ाने के लिए इस केंद्र के तत्वावधान में शिक्षाविदों और उद्योग के बीच नियमित बातचीत की जाएगी। संचार, दल निर्माण, नेतृत्व और क्षेत्रसम्मत कौशलों जैसे सहज कौशल विकसित करने पर विशेष बल दिया जाएगा। नियमित रूप से रोजगार प्रयासों के अलावा अपना खुद का सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम (एमएसएमई) स्थापित करने हेतु छात्रों को व्यावसायिक और उद्यमशीलता का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों भागीदारों के साथ संपर्क किया जाएगा। बी.वोक., सामुदायिक कॉलेज, दीन दयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र और कौशल हेतु उद्भवन केंद्र (एनएसआईसी के सहयोग से) योजना के

तहत पेशकश किए जाने वाले कोर्स इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। शिक्षा के सतत परिवर्तनशील क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने की बढ़ती हुई मांग है जो सीधे कौशलों तथा व्यवसायों को पूरा करती है; जो कि मानक स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का हिस्सा नहीं है।

- **यंत्रीकरण और विश्लेषणात्मक तकनीक:** यंत्रीकरण भारत में एक तेजी से बढ़ता क्षेत्र है। इस क्षेत्र में विशाल क्षमता है क्योंकि भारत वर्तमान में बाजार में उपलब्ध महंगे आयातित यंत्रीकरण की तुलना में गुणवत्तापरक और लागत प्रभावी विकल्प प्रदान करने की तैयारी में है। विश्लेषणात्मक तकनीक और उनके अनुप्रयोग ने जीवन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और सामग्री विज्ञान के व्यापक क्षेत्रों को कवर किया है ,विशेष रूप से अनुसंधान के क्षेत्रों में अत्याधुनिक समाधान उपलब्ध कराने में।
- **निदान पर पाठ्यक्रम:** निदान तकनीक प्रयोक्ता/शिक्षणार्थी में व्यापक ज्ञान की अपेक्षा रखती है जो अंतर-अनुशासनात्मक और बहु-अनुशासनिक प्रकृति की हो। यह पाठ्यक्रम निदान के सभी पहलुओं से निपटने के लिए एक पाठ्यक्रम की पेशकश के द्वारा ज्ञान एवं आवश्यक कौशल और मौजूदा पाठ्यक्रमों में उपलब्ध खाई को पाटने का प्रयास करेगा।
- **मीडिया अध्ययन, तकनीकी लेखन और संपादन में नए कोर्स:** मीडिया अध्ययन का दायरा सदैव बढ़ता जाता है क्योंकि जनता के साथ जुड़ने के नए और अभिनव रूप आकार लेते रहते हैं। श्रव्य, दृश्य, इलैक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया तथा मल्टीमीडिया में मौजूदा मीडिया अध्ययन पाठ्यक्रम अधिकतर निजी संस्थानों द्वारा अवरोधी लागतों पर चलाए जाते हैं। इस कोर्स के द्वारा कम कीमत पर इस तरह के ज्ञान और कौशल प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा और इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपेक्षाकृत आला तकनीकी लेखन, संपादन और मल्टीमीडिया के क्षेत्रों में संभावनाएँ तलाशने का लक्ष्य भी है।
- **सांस्कृतिक एवं विरासत केंद्र:** विश्वविद्यालय स्वदेशी कला, संस्कृति और विरासत पर संस्कृति अध्ययन, स्वदेशी अध्ययन और स्वदेशी कला अध्ययन, संस्कृति और विरासत के क्षेत्र में अध्ययन और शोध की सुविधा हेतु संस्कृति और विरासत केंद्र खोलने का प्रस्ताव रखता है। इसके अलावा, यह केंद्र लोक कला, संगीत और साहित्य के संरक्षण के लिए समर्पित किया जाएगा।

III. ***आत्मनिर्भरता और विविध पहलें:***

- **अधिगम और विकास के आधान विकसित करना:** स्थानीय उद्योग/व्यापार/ हस्तशिल्प/व्यवसायों के सहयोग से स्थानीय/क्षेत्रीय/राष्ट्रीय संवृद्धि तथा विकास को उत्प्रेरित करने हेतु मॉडल, प्रयोग, प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए कर्मचारियों और छात्रों को प्रेरित करना।
- **ठोस अपशिष्ट प्रबंधन:** ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पहल की जाएगी ताकि विश्वविद्यालय एक शून्य अपशिष्ट विश्वविद्यालय बने। ऊर्जा और अन्य उत्पादक सामग्री बनाने में अपशिष्ट का उपयोग करने के विकल्प तलाशे जाएँगे।
- **ई-अपशिष्ट प्रबंधन:** ई-अपशिष्ट तेजी से एक पर्यावरणीय आपदा बनता जा रहा है और विश्वविद्यालय में उत्पन्न होने वाले ई-अपशिष्ट के पुन:उपयोग तथा प्रभावी निपटान की प्रक्रियाएँ शुरू की जाएगी।

- **ऊर्जा उत्पादन:** सौर स्ट्रीट-लैंप, विश्वविद्यालय के भवनों की छतों पर सौर पैनल लगाए जाएँगे और नए भवनों को शून्य ऊर्जा / हरित भवन की अवधारणा पर डिजाइन किया जाएगा।
- **वर्षा जल संचयन**: वर्षा जल संचयन को लागू करने के लिए एक व्यवहार्यता अध्ययन किया जाएगा ताकि विश्वविद्यालय अपने स्वयं के स्रोतों से आवश्यक हिस्सों में पानी देने में सक्षम हो।
- **खेल अकादमी**: चूँकि विश्वविद्यालय के पास पर्याप्त भूमि उपलब्ध है, इसलिए इस भूमि के एक हिस्से का उपयोग छात्रों के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी सुविधाओं से सम्पन्न एक खेल अकादमी स्थापित करने में किया जाएगा। यह सुविधा सदस्यता/लीज पर भी प्रदान की जाएगी ताकि अकादमी विश्वविद्यालय के लिए राजस्व भी अर्जित कर पाएगी। इसके अतिरिक्त, विकलांग व्यक्तियों के लिए खेल सुविधा स्थापित करने पर विशेष जोर दिया जाएगा।
- **जैविक कृषि**: विश्वविद्यालय में उपलब्ध विशाल भूमि को ध्यान में रखते हुए एक जैविक फार्म की स्थापना की जाएगी और विश्वविद्यालय के लिए कुछ राजस्व अर्जित करने के लिए उपज स्थानीय / क्षेत्रीय बाजारों में बेची जा सकती है। इसके अलावा, यह छात्रों को प्रशिक्षण देने और स्थानीय लोगों के लिए प्रदर्शन के उद्देश्य से इस्तेमाल की जा सकती है।
- **सौर ऊर्जा संयंत्र:** विश्वविद्यालय पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए एक स्थायी साधन के रूप में सौर ऊर्जा उत्पादन संयंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव करता है।

IV. संभावित चुनौतियाँ और रोडमैप का अनुसरण करते हुए बाधाओं को दूर करने हेतु प्रस्तावित कदम:

- एनएएसी मान्यता के लिए अब तक कोई प्रयास नहीं किया गया है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि विश्वविद्यालय केवल 6 साल पुराना है। यदि उचित तरीके से रिकार्ड नहीं रखा गया और अद्यतन नियमित रूप से नहीं किया गया होगा तो उपर्युक्त उद्देश्य के लिए आवश्यक आँकड़े प्राप्त करना भागीरथ कार्य हो सकता है।

  इसलिए प्रासंगिक, संगत और यथार्थ जानकारी के वर्गीकरण, संकलन तथा मिलान के लिए कुलसचिव कार्यालय को शामिल किया जाएगा।
- वेबसाइट के उचित डिजाइन में कुछ इस तरह की समस्याएँ पैदा होंगी : वेबसाइट की संरचना, सामग्री, आकर्षण तथा प्रभाव कैसा होना चाहिए?

  इसके लिए या तो वेबसाइट देखभाल के हेतु एक सक्षम टीम को भर्ती प्रयास करने अथवा किसी अनुभवी एजेंसी को इसका बाह्यस्रोतन करने के प्रयास किए जाएँगे। वेबसाइट से संबंधित फैसलों में लागत प्रभावशीलता, गुणवत्ता, दक्षता और गोपनीयता महत्वपूर्ण कारक होंगे।
- विश्वविद्यालय विकास संचित निधि की स्थापना हेतु किसी प्रकार विचलन से बचने के लिए विश्वविद्यालय के अधिनियमों और संविधियों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना होगा।

  विश्वविद्यालय के अधिनियमों और संविधियों के अनुसार और वित्तीय लेनदेन के लिए भारत सरकार के नियमों नीतियाँ, दिशा-निर्देश तथा नियम व विनियम बनाने का कार्य कुलसचिव, वित्त अधिकारी और कानूनी सलाहकार के कार्यालय को सौंपा जाएगा।
- सकारात्मक कार्रवाई के क्षेत्रों की पहचान एक चुनौती होगी क्योंकि इसमें ऐसे क्षेत्रों के लिए सभी संभावित सुझावों के साथ विश्वविद्यालय के सभी घटकों से जानकारी एकत्रित शामिल है।

इस पूरी योजना को कार्यान्वित करने के लिए एक अधिकारप्राप्त समिति की स्थापना करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि किसी भी प्रकार की बाधाओं को शीघ्राति शीघ्र हटाया जाए।

- परीक्षा सुधारों को लागू करने के लिए सबसे बड़ी चुनौती शिक्षण, अधिगम और शिक्षणेत्तर समुदाय की मानसिकता को बदलने की होगी, विशेष रूप से रूचि आधारित क्रेडिट प्रणाली (सीबीसीएस) के प्रावधानों के बारे में।

  इसके लिए एक सुक्षम और विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली के लाभों के बारे में सभी हितधारकों को शिक्षित और जागरूक करने, नए पाठ्यक्रम/कार्यक्रम शुरू करने के संबंध में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँगी।
- विभागों/केंद्रों को अनुसंधान निधियन तथा निधियन अभिकरणों के संबंध में समुचित दिशानिर्देश उपलब्ध कराना।

  विश्वविद्यालय नेतृत्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन केंद्रों के लिए धन उपलब्ध हो, मैं भारत सरकार के विभिन्न विभागों के अंतर्गत विभिन्न निधि एजेंसियों से प्राप्त विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करने के अपने लंबे अनुभव का उपयोग करेगा। इसके अतिरिक्त कुलपति मौजूदा विभागों और नए विभागों एवं केंद्रों को की अध्यक्षता/मार्गदर्शन हेतु समुचित दिशा प्रदान करने के लिए संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञों और उत्कृष्टताप्राप्त लोगों को लाने का प्रयास करेंगे।
- कभी-कभी, सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के साथ यह बाधा होती है कि उनके पास सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा है लेकिन सही विज्ञापन और प्रचार की कमी के कारण वे अच्छे कार्य प्रोफाइल वाले श्रेष्ठतम नियोक्ताओं को आकर्षित नहीं कर पाते। कभी-कभी छात्र कल्याण पहल के लिए धन भी बाधा उत्पन्न कर सकता हैं। समुचित दूरदर्शिता के साथ कुछ निधि अलग रखी जाएगी और न्यूनतम लागत पर व्यावसायिक और उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विशेष निधि सृजित की जाएगी। रोजगार कार्यक्रमों के भलीभांति संचालन के लिए प्रायोजकों की सहायता ली जाएगी।

आधारभूत संरचना के क्षेत्र में, विश्वविद्यालय ने दूसरे चरण का निर्माण कार्य पर शुरू कर दिया गया है और अकादमिक ब्लॉक, स्टाफ क्वार्टर और प्रशासनिक ब्लॉक का काम पूरे जोरों पर जारी है। केंद्रीय पुस्तकालय, छात्र गतिविधि केंद्र और अतिथि गृहों का विकास प्राथमिकता के आधार पर लिया जा रहा है।

प्रो. आर.सी. कुहाड़
कुलपति